वक्तव्य: 04 (समवकार और डिम)

5. समवकार :-सम उपसर्गपूर्वक **अव** तथा **कृ** धातुओं से **घञ्** प्रत्यय लगकर निष्पन्न हुआ है। विश्वनाथ के अनुसार-

वृत्त् समवकारे तु ख्यातं देवासुराश्रयम्।
सन्ध्यो निर्विमर्शास्तु त्रयोऽङ्कारतत्र चादिमे॥
सन्धी द्वावन्त्ययोस्तद्वदेक एको भवेत्पुनः।
नायका द्वादशोदात्ताः प्रख्याता देवमानवाः॥
फलं पृथक्पृथक्तेषां वीरमुख्योऽखिलो रसः।
वृत्तयो मन्दकैशिक्यो नात्र बिन्दुप्रवेशकौ॥
वीथ्याङ्गानि च तत्र स्युर्यथालाभं त्रयोदश।
गायत्र्यष्णिङ्मुखान्यत्रच्छन्दांसि विविधानि च॥
त्रिश्रृङ्गारास्त्रिकपटः कार्यश्चायं त्रिविद्रवः।
वस्तु द्वादशनालीभिर्निष्पाद्यं प्रथमाङ्कगम्॥
द्वितीयेऽङ्के चतसृभिर्द्वाभ्यामङ्के तृतीययके।
धर्मार्थकामैस्त्रिविधः श्रृङ्गारः कपट्टः पुनः॥
स्वाभाविकः कृत्रिमश्च दैवजो चिद्रवः पुनः।
अचेतनैश्चेतनैश्च चेतनाचेतनैः कृतः॥[9]

[9] साहित्यदर्पण, 6/234-40

-अर्थात् –समवकार वह है, जिसमें देवासुर के आश्रित इतिवृत हो तहा **विमर्श** सन्धि के अलावा अन्य सन्धियाँ हों।

-इसकी रचना तीन अङ्को में सम्पूर्ण हो। प्रथमाङ्क में मुख एवं प्रतिमुख सन्धि, द्वितीयाङ्क में गर्भसन्धि व तृतीयाङ्क में निर्वहण सन्धि की योजना आवश्यक है।

-इसमें 12 नायकों का चरित्र-चित्रण होता है। ये धीरोदात्त , प्रख्यात दिव्यम् अथवा अदिव्य होते हैं। प्रत्येक का पृथक प्रयोजन है।

-वीर रस अङ्गी तथा अन्य रस अङ्गरूप में निबद्ध होते हैं।

-इसमें कैशिकी वृत्ति के शाथ अन्य वृत्तियाँ भी होती हैं।

-इसमें **बिन्दु** निक्षेप और प्रवेशक की **योजना** आवश्यक नहीं है।

-उपयोगिता की दृष्टि से वीथी के 13 अङ्को का उपन्यास जरूरी है।

-गायत्री एवं उष्णिक छन्दों के प्राधान्य के साथ वृत्त-वैचित्र्य अपेक्षित है।

समवकार के लिये **त्रिशृङ्गार**, **त्रिकपट** एवं **त्रिविद्रव** होना आवाश्यक है।

इसके प्रथमाङ्क को 12 नाड़ी अर्थात् 24 घड़ी ,द्वितीयांक को 4 नाड़ी अर्थात् 8 घड़ी तथा तृतीयांक को 2 नाड़ी अर्थात् 4 घड़ी में समाप्त किया जाता है।

-त्रिविध श्रृङ्गार से आशय शास्त्रानुकूल धर्मश्रृङ्गार, अर्थलाभार्थक अर्थश्रृङ्गार तथा प्रहसनात्मक कामश्रृङ्गार से है।

-त्रिविध कपट से आशय अवाभाविक,शत्रुकृत (कृत्रिम) तथा देवकृत से है।

-त्रिविध विडवों से आशय अचेतन, चेतन व चेतनाचेतनात्मक तीनों से युक्त है। (विद्रव=उत्पात)

नोट :- उदाहरण- १२वीं शताब्दी के वत्सराज का समुद्रमन्थम्। भास के **पञ्चरात्रम्** को कीथ ने समवकार माना है। कवि घनश्याम (17 ई.शती) का नवग्रहचरितम् भी समवकार है।

-बिन्दु नामक अर्थप्रकृति समवकार में नहीं होती है। अवान्तर प्रयोजन की समाप्ति से कथावस्तु के मुख्य प्रयोजन में विच्छेद प्राप्त हो जाने पर जो उसके अवच्छेद का कारण होता है , वह विन्दु कहलात है।

-प्रवेशक सामाजिकों के हृदय में अप्रत्यक्ष अर्थ का प्रवेश कराता है ।यह अतीत एवं भविष्य के कथांशो को जोडने वाला , अधम-पात्रों द्वारा प्राकृत भाषा में सम्पादित, दो अङ्को के मध्य में स्थित शेष अर्थों का सूचक होता है।

6. डिम :-अभिनवभारती के अनुसार डिम की व्युत्पत्ति निम्न है –

डिमो डिम्बो विद्रव इति पर्याया: तद्योगादयं डिम:। अन्ये तु डयन्त इति डिमा: उद्धतनायकास्तेषां वृत्तिर्यत्रेति॥

अर्थात् डिम का आशय है उत्पात मचाना तथा जिस रूपक में उत्पात का बाहुल्य हो , वह डिम कहलाता है ।

सहित्यदर्पणकार के अनुसार डिम का लक्षण इस तरह है –

मायेन्द्रजालसंग्रामक्रोधोद्भ्रान्तादिचेष्टितै: ।

उपरागैश्च भूयिष्ठो डिम: ख्यातेतिवृत्तक: ॥

अङ्गीशैद्ररसस्त्र सर्वेऽङ्गानि रसा: पुन: ।

चत्वारोऽङ्का मतानेह विष्कम्भकप्रवेशकौ ॥

नायका देवगन्धर्वयक्षरक्षोमहोरगा: ।

भूतप्रेतपिशाचद्या: षोडशात्यन्तमुद्धता: ॥

वृत्तय: कैषिकीहीना निर्विमर्शिच सन्धय: ।

दीप्ता: स्यु: षड्रसा: शान्तहास्यश्रृङ्गारवर्जिता: ॥[10]

अर्थात् डिम वह है , जिसमें माया, इन्दजाल, संग्राम अथवा क्रोधादि से व्यग्रहृदय व्यक्तियों की चेष्टाओं का बाहुल्य रहता है तथा इसमें निर्घात-उल्फात-सूर्य-चन्द्रोपराग आदि का वर्णन होता है ।

-इसका इतिवृत्त प्रख्यात. अंगीरस रौद्र होता है ।

---

[10] . साहित्यदर्पण. 6/241-44

-इसमे चार अङ्क होते है तथा विष्कम्भक-प्रवेशक नहीं होते हैं।

-इसमें 16 नायक होते हैं , जो देव,गन्धर्व,यक्ष, रक्षस , सर्प, भूत, प्रेत, पिशाचादि उद्धतप्रकृति के होते हैं।

कैशिकी कॊ छोड़कर अन्य तीनॊं वृत्तियाँ रहती हैं।

-विमर्श के अतिरिक्त अन्य सन्धियाँ होती हैं।

-शान्त, हास्य एवं श्रृङ्गार को छोड़कर अन्य रसों की दीप्ति जरूरी।

-नाट्यशास्त्र में डिम का उदाहरण **त्रिपुरदाह** दिया गया है।

रूपक तथा उसके भेद